

खुद को विश्वमित्र के रूप में देख रहा है भारत : मोदी

भारत की आध्यात्मिक विरासत को बढ़ाने में रामचंद्र मिशन की बड़ी भूमिका

■ श्री रामचंद्र मिशन मुख्यालय कान्हा शांति वनम में पीएम मोदी ने किया बाबूजी महाराज की 125 वीं जयंती समारोह का शुभारंभ लगाया पौधा

लोक पहल
रंगारेड्डी (तेलंगाना) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्री रामचंद्र मिशन के वैश्विक मुख्यालय कान्हा शांति वनम में एक कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत अब फिर से अपनी पुरानी परंपराओं को अपना रहा है। पीएम ने कहा कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक कमलेश पटेल 'दाजी' ने मानवता के लिए जो काम किया, वह अद्भुत है। पीएम ने कहा कि हमारी सरकार को उनके योगदान को पद्म पुरस्कार से सम्मानित करने का सौभाग्य मिला। उनको सम्मानित करके पुरस्कार स्वयं सम्मानित हो गया है। मोदी ने कहा कि विकसित हो रहा भारत खुद को विश्वमित्र के रूप में देख रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 'कान्हा शांति वनम को दुनिया का सबसे बड़ा मेडिटेशन हॉल कहा जा रहा है। जब इस हॉल में 1



लाख से ज्यादा लोग एक साथ ध्यान लगाएंगे तो जो ऊर्जा यहां पैदा होगी उसका अंदाजा लगाया जा सकता है। इस कान्हा शांति वनम में जिस संस्कृति को हम जी रहे हैं वो हजारों वर्षों के सतत प्रवाह से निरंतर समृद्ध हुई है। इसमें हमारे संतों और तपस्वियों की समृद्ध परंपरा का, समृद्ध विरासत का और अथक एकनिष्ठ प्रयासों का प्रतिबिंब है। कान्हा शांति वनम इसी परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। प्रधानमंत्री ने मिशन



के आदि गुरु लाला जी, संस्थापक रामचंद्र जी महाराज (बाबूजी) व पी. राजगोपालाचारी (चारी जी) का स्मरण करते हुए कहा कि इन महान आध्यात्मिक विभूतियों के प्रयासों से आज 16 से ज्यादा देशों के लोग सहज मार्ग साधना पद्धति से योग और अध्यात्म को अपना रहे हैं। ये मानवता की बहुत बड़ी सेवा है। हर ध्यान, हर घर ध्यान, हर दिल ध्यान ये आपका संकल्प भारत ही नहीं बल्कि पूरी मानव

समृद्धि पैसे से ही नहीं आती है, यह सांस्कृतिक मूल्यों की मजबूती से भी आती है। आज भारत आर्थिक, सांस्कृतिक और कई क्षेत्रों में बड़ी प्रगति कर रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत को गुलाम बनाने वालों ने भी हमारी असली ताकत ज्ञान, ध्यान, योग, आयुर्वेद पर हमला बोला था जिसका हमें बहुत नुकसान हुआ। भारत की आजादी का अमृतकाल है। पूर्व में श्री रामचंद्र मिशन के अध्यक्ष कमलेश डी पटेल 'दाजी' ने समृद्ध भारत के निर्माण में प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों की सराहना की और उन्हें अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने कान्हा शांतिवनम में पौधा भी लगाया।



यूपी में अब 'स्पीकर' नहीं होंगे 'लाउड'

■ सीएम योगी के आदेश पर उतरवाये गये करीब तीन हजार लाउडस्पीकर

लोक पहल
लखनऊ। बुल्डोजर मॉडल से देश भर में चर्चित होने वाले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का अब लाउडस्पीकर हटाओ मॉडल भी सुखियां बटोर रहा है। पूरे उत्तर प्रदेश में प्रशासन धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर उतारने का काम सख्ती से कर रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने अधिकारियों को सख्त आदेश दिए हैं कि मन्दिर हो या मस्जिद, आरती हो या अजान धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकर अगर नियम तोड़ रहे हैं तो उन्हें तुरन्त उतार दो। लाउडस्पीकर के खिलाफ पूरे प्रदेश में अभियान चलाया गया। सात हजार से ज्यादा लाउडस्पीकरों की आवाज कम कराई गई और तीन हजार से ज्यादा हटाए गए। शासन के निर्देश पर प्रदेश के सभी जिलों में चेकिंग टीम बनाकर धार्मिक स्थलों और

सार्वजनिक स्थलों पर लगे अवैध लाउडस्पीकरों की जांच की गई। 61399 लाउडस्पीकरों को चेक किया गया। मानक के विपरीत पाए गए 7288 लाउडस्पीकरों की आवाज कम कराई गई। मानक के विपरीत और निर्धारित डेसीबल सीमा से अधिक चल रहे 3238 लाउडस्पीकरों को उतरवाया गया। पुलिस टीमों ने लाउडस्पीकरों की संख्या और आवाज मानक से कम रखने के लिए नोटिस के साथ चेतावनी दी। प्रदेश के अंबेडकरनगर, अमेठी, बहराइच, बाराबंकी, अयोध्या जिले में भी एसएसपी राजकरन नय्यर के नेतृत्व में पुलिस ने जिले में विभिन्न स्थानों पर अभियान के तहत धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकर उतरवाए। वहीं गोंडा, रायबरेली सहित प्रदेश के सभी जिलों में धार्मिक स्थलों में लगे लाउडस्पीकरों को पुलिस प्रशासन ने चेक किया व मानक के विपरीत पाए जाने पर उतरवा दिया। प्रशासन की इस कार्यवाही से पूरे प्रदेश में हड़कंप मचा रहा।

कोटा में एक और आत्महत्या, नीट की तैयारी कर रहे छात्र ने दी जान

नई दिल्ली एजेंसी। कोटा में छात्रों के सुसाइड करने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। छात्र द्वारा आत्महत्या करने का एक और मामला सामने आया है। नीट की तैयारी कर रहे एक और छात्र ने आत्महत्या कर ली। 20 वर्षीय छात्र दादाबाड़ी के वक्फनगर में किराये पर रहकर तैयारी कर रहा था और यहीं दादाबाड़ी की ही कोचिंग से पढ़ाई कर रहा था। वह पश्चिम बंगाल का रहने वाला था। दादाबाड़ी थाना अधिकारी राजेश कुमार पाठक ने

बताया कि पश्चिम बंगाल निवासी 20 वर्षीय फेरीद कोटा में रहकर एक कोचिंग संस्थान से नीट की तैयारी कर रहा था। वह वक्फनगर में किराए का कमरा लेकर रह रहा था। दोपहर को वह कमरे में था। शाम तक कमरे से नहीं निकला तो अन्य छात्रों व मकान मालिक ने दरवाजा खटखटाया, नहीं खोलने पर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर दरवाजा तोड़ा तो फेरीद संदिग्ध हालत में मृत मिला।

मैं लहर-लहर अविनाशी हूँ, मैं काशी हूँ मैं काशी हूँ

■ घर की इयोढ़ी से लेकर महादेव की चौखट तक कदम-कदम पर जले दीप, लेजर व क्रैकर शो का दिखा अद्भुत नजारा

लोक पहल
वाराणसी। देश ही नहीं दुनिया भर के लोगों ने जब काशी की देव दीपावली की भव्यता देखी तो दीपो की रोशनी से नहाये काशी ने सभी का मन मोह लिया। करीब 15 लाख लोग इस भव्य आयोजन के साक्षी बने। घर की देहरी से लेकर बाबा की चौखट तक घाट, गलियों, सड़कों, रास्तों में जल रहे दीपों से काशी की छटा देखते ही बनती थी। देवाधिदेव महादेव की काशी के घाटों पर 21 लाख दीप एक साथ जले तो नजारा देवलोक जैसा दिखा। देवताओं के साथ काशीवासियों ने भव्यता से देव दीपावली मनाई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पहला दीया जलाया, फिर एक-एक करके 85 घाटों, गंगा

उसपार रेती, तालाब, कुंड, मंदिर और घरों में दीप जलाए गए। चेत सिंह घाट पर लेजर शो और गंगा पार क्रैकर्स शो का अद्भुत नजारा दिखा। दशाश्वमेध घाट की

महाआरती में राम भक्ति और राष्ट्रवाद की झलक देखने को मिली। यह पहला मौका था, जब 70 देशों के राजदूत सहित 150 विदेशी मेहमान आए और देव दीपावली का भव्य व दिव्य नजारा देखा। देव दीपावली पर काशी नगरी में लगभग 21 लाख दीप प्रज्वलित किए गए। प्रदेश सरकार की तरफ से 12 लाख दीपक, स्वयंसेवी संस्था और जन सहभागिता से कुल 21 लाख से अधिक दीपों से काशी रोशन हुई। यह पहला मौका है, जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुवाई में 70 देशों के राजनायिकों ने अलौकिक, अद्भुत और अविस्मरणीय क्षण को देखा है। धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक नगरी काशी में सभी घाटों पर शंखनाद, भव्य महाआरती और घंट-घड़ियालों की ध्वनि से काशी की धरती पर देवताओं का स्वागत हुआ। दशाश्वमेध घाट की महाआरती रामलला को समर्पित रही।

विपक्ष के सभी मुद्दों का जवाब देने को सरकार तैयार: मुख्यमंत्री

■ उत्तर प्रदेश विधान मण्डल सत्र के साथ ही आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू

■ काले कपड़े पहनकर सदन पहुंचे सपा नेता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानमंडल का सत्र शुरू हो गया है। सत्र के पहले दिन नेता सदन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भाजपा के दिवंगत नेता आशुतोष टंडन को श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि उनके निधन से हम सभी दुखी हैं। हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। सत्र में सत्ता पक्ष ने विपक्ष को हर मुद्दे पर जवाब देने की रणनीति बनाई है तो विपक्ष ने भी सरकार को घेरने की पूरी तैयारी कर ली है। सत्र प्रारंभ होने से



सकारात्मक चर्चा करने के निर्देश दिए। विधानसभा का शीतकालीन सत्र नई नियमावली के साथ शुरू हो रहा है। सपा विधायकों ने इसका

विरोध किया है और सदन में काले कपड़े पहनकर पहुंचे। इसके साथ ही सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्यों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी शुरू हो गया है। सपा नेता शिवपाल सिंह यादव ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर सरकार की नाकामियां गिनाते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार बिजली, पानी और सड़क के मोर्चे पर पूरी तरह असफल साबित हुई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि विधानसभा का शीतकालीन सत्र शुरू हो रहा है। मैं सभी विपक्षी दलों से अपील करता हूँ कि सदन की गरिमा बनाए रखें। सरकार विपक्ष के सभी सवालों का जवाब देने के लिए तैयार है।

युवा उत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बिखेरी छटा

■ युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल ने किया आयोजन

लोक पहल
शाहजहांपुर। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन गन्ना किसान संस्थान में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया गया। नेहरू युवा केन्द्र के जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया ने युवाओं को राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में अधिक से अधिक सहभागिता हेतु प्रेरित किया। प्रभारी जिला युवा कल्याण अधिकारी मोहित कुमार द्वारा पूरे कार्यक्रम को सुव्यवस्थित रूप से आयोजित किया गया। समूह गायन में प्रथम स्थान पर जी एफ कॉलेज, द्वितीय पर आर्य महिला इंटर



कॉलेज व तृतीय पर राजकीय कन्या इंटर कॉलेज रहे, एकल गायन में प्रथम अपूर्व मिश्रा, दूसरे मोहिनी प्रजापति व तृतीय पर अंजू देवी रही, कहानी लेखन में प्रथम सानिया इदरीसी, द्वितीय उमरा

सलीम व तृतीय अभिषेक पांडे रहे, भाषण प्रतियोगिता में प्रथम अनम, द्वितीय हर्ष पांडे, तृतीय

सानिया अंसारी रहीं, एकल नृत्य में प्रथम रोजी खान, द्वितीय साक्षी वर्मा व तृतीय पर तनु सक्सेना रहीं, समूह नृत्य में प्रथम आर्य महिला इंटर कॉलेज, द्वितीय पर राजकीय कन्या इंटर कॉलेज व तृतीय पर मसूरी इंटरनेशनल स्कूल रहा, फोटोग्राफी में प्रथम नेहा महफूज, द्वितीय सानिया अंसारी, पोस्टर मेकिंग में प्रथम विधि मिश्रा, द्वितीय सौम्या शुक्ला, तृतीय रजत बाबू रहे। सभी विजेताओं को उपहार व प्रमाण पत्र वितरित किये गए। निर्णायक मंडल में जरीफ मलिक आनंद, रमापति द्विवेदी सोनी, आलोक सक्सेना, डॉ प्रतिभा सक्सेना रहे। कार्यक्रम में क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी शुभम सिंह, राहुल उपाध्याय, अनुराग कुमार, नैसी गुप्ता, मोहम्मद नकी इदरीसी, पायल पटेल, वेदप्रकाश, तीर्थराम, विजय वर्मा, इंद्रजीत व शिवनाथ आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ सुरेश मिश्रा ने किया।

ताइक्वांडो के गुरु सीख कर आत्मरक्षा के लिए तैयार हो रही हैं बालिकाएं

■ 'मानवता' संस्था दे रही है बेटियों को निःशुल्क प्रशिक्षण

लोक पहल
शाहजहांपुर। मानवता वेलफेयर सोसायटी की ओर से पिछड़ी बस्ती के बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास एवं बेटियों को आत्मरक्षा के गुरु सिखाने के लिए निःशुल्क ताइक्वांडो प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षक अभिषेक कुमार राना बालिकाओं को आत्मरक्षा के गुरु सिखा रहे हैं। मिशन शक्ति अभियान के तहत संस्था द्वारा महिला

सशक्तिकरण का जोर दिया जा रहा है। साथ ही ग्राम रेभा में मानवता की पाठशाला की शुरूआत की गई जहां संचालक मनीष कुमार यादव बच्चों को रोजाना निशुल्क शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। संस्था संस्थापक अमित श्रीवास्तव ने बताया कि हमारा उद्देश्य ऐसे गरीब पिछड़े बच्चों को आगे लाना है जो धन और जानकारी के अभाव में हर काम में पीछे रह जाते हैं। संस्थाद्वारा पिछले दो वर्षों से लगातार अलग अलग जगहों पर योग्य शिक्षकों-शिक्षिकायों द्वारा

पिछड़े बच्चों को नियमित शिक्षा दी जा रही है। संस्था के सदस्यों शुभम, अंकिता वर्मा, डॉ जयंती सक्सेना, नीरा श्रीवास्तव, लवली, मौसम, फरिया आरिफ, दीप्ति आदि का विशेष सहयोग रहता है।



तीव्र गति से विकसित हो रही है भारतीय अर्थव्यवस्था: डा. विकास प्रधान

■ एसएस कालेज में 'भारतीय अर्थव्यवस्था-75' पर संगोष्ठी का आयोजन

अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था अल्पविकसित अर्थव्यवस्था से तीव्र गति से विकसित होने वाली अर्थव्यवस्था बन गई है जो

है। किंतु आर्थिक वृद्धि को आर्थिक विकास में परिवर्तित करना अभी भी एक बड़ी चुनौती है। विभागाध्यक्ष प्रो मधुकर शुक्ला ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में संभावनाएं व चुनौतियाँ दोनों विद्यमान हैं जिन्हें आवश्यकतानुसार नीतिगत निर्णयों की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन डॉ राम शंकर पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम में डॉ. विकास खुराना, डॉ. पूजा बाजपेई, डॉ. पदमजा मिश्रा, धरमवीर सिंह, शीतू शुक्ल, व्याख्या सक्सेना, मोनू कुमार, शिवजीत मिश्रा, अर्थशास्त्र विभाग के स्नातक व परास्नातक के विद्यार्थी उपस्थित रहे।



आज विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा पांच ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनने की राह पर

31 दिसम्बर के बाद सड़को पर नहीं दिखेंगे गोवंश: धर्मपाल सिंह

■ हलाल टैग एक धर्म विशेष को फायदा पहुंचा रहा है

लोक पहल
शाहजहांपुर। यूपी के पशुधन एवं अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री धर्मपाल सिंह शाहजहांपुर पहुंचे। यहां उन्होंने हलाल टैग को लेकर विरोध कर रही समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पार्टी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हलाल टैग एक धर्म विशेष को फायदा पहुंचा रहा है। ऐसे में हलाल टैग का विरोध करने वाली पार्टियों के पेट में दर्द हो रहा है। जबकि जनता हलाल टैग पर योगी की कार्रवाई की सराहना कर रही है। छुट्टा पशुओं को लेकर मंत्री ने कहा कि सरकार 1 नवंबर से 31 दिसंबर तक हर गोवंशों को गौशाला पहुंचने का विशेष अभियान चला रही है। इसके अलावा प्रदेशभर में गोवंशों की टैगिंग की जाएगी। 1 जनवरी से अगर

कोई भी गोवंश को छोड़ता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई और जुर्माना दोनों किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिसंबर तक पूरे प्रदेश के लोगों को सड़कों पर घूम रहे गोवंशों से मुक्ति मिल जाएगी। इससे पूर्व विकास भवन सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक



में मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि निराश्रित गोवंश सरक्षण सरकार की प्राथमिकता है, शासन इसके प्रति गंभीर है। उन्होने सख्त निर्देश दिये कि ०1 जनवरी, 2०24 से कोई भी गोवंश सड़को पर न

दिखे, 31 दिसम्बर तक शतप्रतिशत निराश्रित गोवंशों को अश्रय स्थलों में संरक्षित किया जाये। यदि गाये सड़को पर निराश्रित पायी गयी तो संबंधित के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही अमल में लाई जायेगी। उन्होंने कहा कि गाय में 33 करोड़ देवी देवता निवास करते हैं, गाय करुण का प्रतीक है। उन्होने बताया कि देसी गायों में भ्रूण प्रत्यारोपण के माध्यम से गायों की नस्लों में सुधार किया जाएगा। इससे दुग्ध उत्पादन बढ़ेगा और पशुपालकों की आय में बढ़ोतरी होगी। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव, महापौर अर्चना वर्मा, विधायक वीर विक्रम सिंह, विधायक हरी प्रकाश वर्मा, सीडीओ एसबी सिंह, डीडीओ पवन कुमार सिंह, डीपीआरओ घनश्याम सागर आदि मौजूद रहे।

खलील शाहजहाँपुरी को फरहत कादरी और आफताब कामिल को डॉ. यूसुफगौहर पुरस्कार

लोक पहल
शाहजहाँपुर। साहित्यिक संस्था इदराक और नजर मेमोरियल सोसाइटी के तत्वावधान में यहाँ शहीद अशफक उल्ला खां मेमोरियल स्कूल में एक शाम आफताब कामिल वारसी के नाम महफिल ए मुशायरा व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली के मुहम्मद साबिर खान ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व आईआरएस कमल किशोर कठेरिया और डिप्टी कमिश्नर जीएसटी प्रवेश कुमार तोमर मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मंसूर सिद्दीकी ने किया।

असगर यासिर ने मोहम्मद साबिर खान और नजर सोसाइटी के महासचिव हमीद खिजर ने आफताब कामिल को शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। राशिद हुसैन राही ने आफताब कामिल को डॉ. यूसुफ गौहर साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किया। असगर यासिर व हमीद खिजर ने हजरत फरहत कादरी साहित्य पुरस्कार खलील शाहजहाँपुरी को प्रदान किया। इस मौके पर आयोजित मुशायरे में जफर जलील, असगर यासिर,



शाहिद रजा, राशिद नदीम, हमीद खिजर, हसीब चमन, खलीक शौक, ज्ञानेंद्र मोहन ज्ञान, असलम तारिक, आफताब कामिल वारसी, राशिद हुसैन राही, फहीम बिस्मल, इशरत सगीर, गुलिस्तां खान, डॉ. मंसूर सिद्दीकी, एम रिजवान, मजहर खान, विकास सोनी ऋतुगज, फरमान खां चिश्ती, इरफान रूहानी आदि शायरों व कवियों ने अपने गीतों व गजलों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

धरोहर

जिले की ऐतिहासिक धरोहर है बाबा वनखण्डी नाथ मन्दिर

मोहल्ला खलील शर्की में मुख्य सड़क के किनारे स्थित विशाल बाबा वनखंडी नाथ मंदिर को शहर के सभी नागरिकों ने आते जाते देखा होगा। शहर का हर आदमी उसके सामने से एक बार जरूर निकला होगा। लोगों का मानना है कि इस मन्दिर की स्थापना 195 में हुई थी लेकिन यह प्रारम्भ नहीं है आदि नहीं है बल्कि मध्य है, आदि वह है जब यहां एक बड़ा सा मैदान था जिसके पूर्वी हिस्से में राब बनाने का कारखाना लगा था, शेष समूचे हिस्से में गन्ने की लड़ियाँ खड़ी होती। आस पास के गांव से भूसा बेचने वाले भी अपनी लड़ी खड़ी करते थे। इस भूमि और कारखाने के मालिक की कोठी भी परिसर से लगी हुयी थी (कोठी अभी भी है



सुशील दीक्षित 'विचित्र'

पिछले भाग में रखे हुए देखे जा सकते है। अस्तु, यह घटना 195 की है मंदिर बनाने के अनुमति मिल गयी,

घंटाघर के पास रहने वाले एक धनाढ्य परिवार ने शिव जी की आदमकद प्रतिमा लगवाई। इसमें सेठ परिवार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 197 के आसपास पार्वती जी और गणेश जी की प्रतिमा लगवाई गयी। वरिष्ठ अधिवक्ता कमल शुक्ला शील ने बताया कि पार्वती और गणेश जी की मूर्तियां बाद में लगाई गयीं। इससे पहले मंदिर में शिव जी की आदमकद प्रतिमा लगी थी। नगर में यह भी श्रद्धा और आकर्षण का कारण थी। यह मूर्तियां माली परिवार की विधवा महिला ने लगवाई थीं। जब मूर्तियां आयीं तो



बहुत धूमधाम से उनकी बरात (शोभायात्रा) निकाली गयी। बारात का स्वागत भी उस महिला ने अपने घर पर किया था। इस बरात में वे भी शामिल हुए थे। इसके बाद बहुत विधिविधान से गणेश जी को बीच में करके पार्वती जी को शंकर जी के साथ प्राणप्रतिष्ठित किया गया था। इसके एक भाग में सड़क की ओर कुछ दुकाने और मंदिर के दक्षिण हिस्से में बनी इमारत के ऊपरी भाग में पुजारी का परिवार रहता है। नीचे के हाल को धर्मशाला नाम दिया गया लेकिन इसमें आज तक किसी यात्री को टिका नहीं देखा गया। अस्तु, नगर में समय समय पर पाये जाने वाले शिवलिंग और मूर्तिया इसलिए मिलती हैं क्योंकि मुजफ्फरनमा के अनुसार गंगाद्वार नाम का यह नगर कभी महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल था जिसमें बाबन गढ़ियां थी, उनके मंदिर थे। मुगलों के हमले में सब नष्ट करके उनके स्थानों पर अफगानी कबीलों के नाम वाले मोहल्ले बसा दिए गये जो आज जई और खेल के नाम से जाने जाते हैं, मसलन मोहम्मदजई, हुंडाल खेल आदि आदि।

महिलाओं को सुरक्षित गर्भ समापन की दी जानकारी

शाहजहांपुर (लोक पहल)। विनोबा सेवा आश्रम संस्था से जुड़कर सांझा प्रयास नेटवर्क की ओर से प्रोग्राम ऑफिसर कमला सिंह ने ग्राम दिलावरपुर में स्वालंबन उद्यमिता कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिलाओं को एमटीपी एक्ट के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गर्भ समापन कब कानून सही है गर्भवती महिला की जान को खतरा होने पर, गर्भनिरोधक साधनों के सफल होने पर, जबरन संभोग द्वारा गर्भ ठहरने पर, गर्भवती महिला के मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य के गंभीर खतरा संभावना होने पर, होने वाले शिशु के गंभीर विकृति की संभावना होने पर, सुरक्षित गर्व समापन के लिए केवल सरकारी अस्पताल अथवा मान्यता प्राप्त नर्सिंग होम प्रशिक्षित डॉक्टर से ही गर्भ समापन की सेवा लेनी चाहिए। उन्होंने बताया कि गर्भ समापन करने के बाद परिवार नियोजन के साधनों को जरूर अपनाना चाहिए नहीं तो गर्भ ठहरने का बहुत डर रहता है।



सम्पादकीय बच्चों के जीवन पर भारी पड़ती अभिभावकों की महत्वाकांक्षा

बच्चों के शिक्षा ग्रहण करने की शुरुआत के साथ ही हर मां बाप बस एक ही सपना देखता है कि उसका बच्चा डाक्टर, इंजीनियर या बड़ा अधिकारी बने। इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार रहते है। यहां तक कि बच्चों के कोमल हृदय और मस्तिष्क पर इतना दबाव डाल देते हैं कि वह जरा सी असफलता को सहन नहीं कर पाता और जीवन से पलायन करने की सोचने लगता है इसके लिए जो दबाव की स्थितियां पैदा की जाती हैं, उसमें कई बच्चों की जिंदगी तक छिन जाती है। पिछले कुछ सालों से यह हकीकत लगातार सामने आ रही है कि इंजीनियरिंग या चिकित्सा की पढ़ाई करने के लिए बच्चों का दाखिला राजस्थान के कोटा जैसे कुछ खास शहरों में कराया जाता है, मगर वहां उपजे दबाव को नहीं सह पाने की वजह से कई बच्चे आत्महत्या तक कर ले रहे हैं।

ऐसी घटनाओं में इजाफे ने हर तरफचिंता पैदा की है, मगर आज भी बहुत सारे अभिभावक यह समझ पाने में नाकाम हैं कि अपना सपना पूरा करने निकले बच्चे आखिर क्यों मौत को चुन लेते हैं। इस मसले पर अब सुप्रीम कोर्ट ने भी चिंता जताई है कि वक्त के साथ ज्यादा सख्त होते प्रतिस्पर्धा के मानदंड के समांतर अभिभावकों की ओर से पैदा किए गए अत्यधिक दबाव को कई बच्चे नहीं झेल पाते हैं और आत्महत्या का रास्ता अख्तियार कर लेते हैं। अदालत की टिप्पणी एक याचिका पर सुनवाई के दौरान सामने आई, जिसमें तेजी से बढ़ते कोचिंग संस्थानों के विनियमन का अनुरोध किया गया है और विद्यार्थियों की आत्महत्या के आंकड़ों का हवाला दिया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि मेडिकल या इंजीनियरिंग की शिक्षा के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिले के लिए जो पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, उसकी जटिलता के मद्देनजर बच्चों को सामान्य से ज्यादा पढ़ाई करने की जरूरत पड़ती है। इसके लिए उनके अभिभावक वैसे कोचिंग संस्थानों में बच्चों का दाखिला कराते हैं, जिनके बारे में आम धारणा होती है कि वहां से पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी आसानी से परीक्षा पास कर जाते हैं। कोचिंग संस्थान अपनी छवि चमकाने की मंशा से विद्यार्थियों पर परीक्षा में खुद को सबसे बेहतर साबित करने के लिए जरूरत से ज्यादा दबाव डालते हैं। इसी दबाव से उपजे तनाव को कई बार कुछ बच्चे नहीं झेल पाते हैं और जिंदगी से हार जाते हैं। हालांकि कोचिंग संस्थानों की हकीकत किसी से छिपी नहीं है और आए दिन वहां से बच्चों की आत्महत्या की घटनाएं सामने आती रहती हैं। इसके बावजूद ऐसे तमाम अभिभावक हैं, जो अपने बच्चों को चिकित्सक या इंजीनियर बनाने के लिए वहां पढ़ाई करने भेजते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि जिन बच्चों की रुचि किसी अन्य विषय में पढ़ाई करने की होती है, उन्हें भी उनके अभिभावक मेडिकल या इंजीनियरिंग की तैयारी करने भेज देते हैं। इस होड़ में शामिल अभिभावकों की ओर से उपजे दबाव और तनाव का सामना बच्चों को करना पड़ता है। कोचिंग संस्थानों की अव्यवस्था से लेकर उनके पढ़ाई के स्वरूप निश्चित रूप से कठघरे में हैं और उन्हें जिम्मेदारी से मुक्त नहीं किया जा सकता। मगर अपनी महत्वाकांक्षा का बोझ बच्चों से पूरा कराने की होड़ में शामिल अभिभावकों को क्या यह सोचने की जरूरत नहीं है कि इस होड़ का हासिल क्या है? किसी भी समस्या का हल निकालना तभी संभव हो पाता है, जब उसके मुख्य कारणों की पहचान कर ली जाती है। कोटा या कहीं भी पढ़ाई के क्रम में उपजे तनाव का बोझ अगर बच्चों की जिंदगी पर ही भारी पड़ रहा है तो अभिभावकों को यह सोचने की जरूरत है कि आखिर उनका चुनाव क्या है- बच्चों की जिंदगी या फिर ऐसी पढ़ाई, जो उन्हें जानलेवा तनाव के संजाल में झोंक दे !

जलवायु परिवर्तन



हज्जान, शाहजहांपुर

जलवायु एक जटिल प्रणाली है जिसमें सूर्य महासागर वायुमंडल भूमि की सतह बर्फऔर पौधे और पशु जीवन शामिल हैं प्राकृतिक शक्तियाँ और मानवीय परिवर्तन दोनों ही इस प्रणाली के व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं जलवायु और मौसम एक ही चीज से प्रभावित होते हैं गर्मी या ठंड सूरज या बादल बारिश या सूखा बर्फऔर बर्फहवा या शांति। मौसम वह है जो घंटे दर घंटे दिन दर दिन या महीने दर महीने बदलता रहता है जलवायु को औसत मौसम कहा जा सकता है लंबी अवधि में यह एक निश्चित स्थान पर कैसा रहता है हालाँकि यह एक सरलीकरण भी है जलवायु परिवर्तन भी होता है लेकिन आमतौर पर बहुत लंबे समय के पैमाने पर। मौसम पूर्वानुमानकर्ता अक्सर 3०-वर्ष की अवधि में औसत तापमान की गणना करके जलवायु को परिभाषित करते हैं पत्रकारिता और राजनीति की दैनिक दिनचर्या ही दीर्घकालिक सोच के विरुद्ध काम करती है संपूर्ण मानव अतीत के दौरान जलवायु परिवर्तन ने लोगों के जीवन जीने के तरीके में मूलभूत परिवर्तन को मजबूर कर दिया है इसने संस्कृतियों और सभ्यताओं की शुरुआत और अंत को प्रभावित किया है ग्लोबल कूलिंग जिसे हम हिम युग के रूप में जानते हैं ग्लोबल वार्मिंग के रूप में नियमित रूप से घटित हुई है जिससे मनुष्यों और अन्य प्रजातियों को बड़े पैमाने पर लाभ और हानि हुई है 197० के दशक के मध्य के दौरान कई प्रमुख

जलवायु वैज्ञानिक एक और हिमयुग की शुरुआत की चेतावनी दे रहे थे और सरकार से आपदा को रोकने के लिए कार्रवाई करने का आग्रह कर रहे थे हाल के वर्षों में मानव स्वास्थ्य को होने वाले अन्य नुकसानों के बारे में चिंता उभरी है जो ग्लोबल वार्मिंग के कारण हो सकते हैं यहां तक कि जब जलवायु परिवर्तन हो रहा हो तब भी इसे निश्चित रूप से जानना कठिन है वैश्विक औसत तापमान स्वाभाविक रूप से साल दर साल और यहां तक कि दशक दर दशक भी भिन्न हो सकता है समस्या यह जानने में है कि औसत क्या है और यह वास्तव में कब बदला है कुछ वैज्ञानिकों ने सोचा कि 1997-1998 के तीव्र अल नीनो ने वार्मिंग में योगदान दिया लेकिन 1998 औसत से ऊपर वैश्विक तापमान का लगातार 2वां वर्ष था वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि पिछले 1०० वर्षों में वैश्विक औसत सतही वायु तापमान में ०.3 से ०.6 सेल्सियस की वृद्धि हुई है लेकिन वे इस बारे में कम निश्चित हैं कि उस तापमान में वृद्धि का कारण क्या हो सकता है यह निश्चित रूप से कहना कठिन है कि या तो यह शुरू हो गया है या नहीं क्योंकि वैश्विक तापमान में वृद्धि अभी भी प्राकृतिक परिवर्तनशीलता की सीमा को पार नहीं कर पाई है समय बताएगा इनकार एक सामान्य मानवीय प्रतिक्रिया है ग्लोबल वार्मिंग के बारे में अनिश्चितताओं के साथ समस्या यह है कि वही अनिश्चितताएँ खतरे को नकारना आसान बना देती हैं दिया गया मनुष्यों द्वारा ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के समय और प्रतिक्रिया में पृथ्वी के गर्म होने के बीच के अंतराल के बावजूद इनकार करना अब भी आसान है जब तक वास्तविक विश्वास के साथ इसका पता चलेगा तब तक मनुष्य ग्लोबल वार्मिंग के प्रति गहराई से और अपरिवर्तनीय रूप से प्रतिबद्ध हो सकता है इस संबंध में यह फेफड़ों के कैंसर से भी मिलता जुलता है जो किसी व्यक्ति में धूम्रपान शुरू करने के 3० या 4० साल बाद दिखाई दे सकता है जलवायु वैज्ञानिकों ने यह अनुमान

लगाने के लिए कंप्यूटर मॉडल तैयार किए हैं कि जलवायु परिवर्तन कब प्रकट हो सकता है ये मॉडल पृथ्वी के बारे में हमारी अपूर्ण समझ से बेहतर नहीं हो सकते हैं और उनके उत्तर अलग अलग होते हैं फिर भी वैज्ञानिक जलवायु प्रणाली की अधिकांश बुनियादी बातों को समझते हैं और मॉडल कई भविष्यवाणियों में कौशल दिखाते हैं आज कंप्यूटर मॉडल का सर्वश्रेष्ठ अनुमान यह है कि सामान्य रूप से व्यवसाय उत्सर्जन को देखते हुए वर्ष 21०० तक वैश्विक तापमान 199० के स्तर से लगभग 2 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाएगा इस परिमाण के वैश्विक



तापमान में वृद्धि से वैश्विक औसत वर्षा और वाष्पीकरण में कुछ प्रतिशत अंक की वृद्धि होने और बर्फ और बर्फ के क्षेत्रों में कमी आने की उम्मीद है यदि मानवीय गतिविधियाँ वैश्विक जलवायु को बदल रही हैं यह कौन कर रहा है और कौन प्रभावित है व्यावहारिक रूप से हर कोई कोई भी जो कोयला तेल गैस जलाकर बनाई गई बिजली का उपयोग करता है या बायोमास जिस किसी के घर की भट्ठी गैस या तेल जलाती हो जो कोई खाना पकाने या गर्म रखने के लिए लकड़ी या कोयला जलाता है कोई भी व्यक्ति जो अपने घर या कार को एयर कंडीशन करता है या जिसके पास सीएफ़सीएस वाला रेफ्रिजरेटर है जो कोई कार चलाता है कोई भी जो खेत के जानवरों को पालता है या खाता है कोई भी जो चावल उगाता है या खाता है या कोई भी जो फसल उगाने के लिए सिंथेटिक उर्वरकों का उपयोग करता हैं।

आखिर क्यों है ऑनलाइन हाजिरी का विरोध ?



अंकुर त्रिपाठी 'विमुक्त' शाहजहांपुर

अखबारों की खबरें इस तरह माहौल बना रही है जैसे शिक्षक अपने दैनिक कर्तव्यों को करना नहीं चाहता। अखबारों के माध्यम से शिक्षक बिरादरी को लेकर एक नकारात्मक माहौल बनाया जा रहा है लेकिन शिक्षक ऑनलाइन हाजिरी का विरोध क्यों कर रहे हैं इसको लेकर किसी समाचार पत्र एवं सामाजिक संगठन ने बात करना भी मुनासिब नहीं समझा है। यदि शिक्षकों की समस्याओं पर गौर किया जाए तो आपके पैरों तले जमीन खिसक जाएगी। ऐसी कमरों में बैठने वाले हुक्मरान यह नहीं जानना चाहते कि जो विद्यालय दुर्गम क्षेत्रों में है जहां आवागमन का कोई साधन नहीं है , पगडंडी वाली रास्ताएं है जहां किसी वाहन से चल पाना संभव नहीं है वहां अध्यापक कैसे पूरे वर्ष पहुंचेंगा? लोग प्रश्न उठाएंगे इस विषय पर कि इससे पहले कैसे पहुंच रहा था तो मैं इसे भी स्पष्ट करना चाहूंगा कि पूरे वर्ष निरंतर एक ही समय पर किसी भी व्यक्ति को एक जगह पर नहीं पहुंचाया जा सकता। प्रोबिलिटी कहती है कि कुछ विशेष दिवसों में शिक्षक को देरी हो सकती है। वह देरी बारिश के कारण हो सकती है, वह देरी बाढ़ के कारण हो सकती है, वह देरी प्राकृतिक आपदा के कारण हो सकती है, वह देरी सड़क दुर्घटना के कारण हो सकती है। वह देरी सोमवार को फलों की टोकरी मोटर साइकिल पर लादकर ले जाने में हो सकती है। वह देरी एमडीएम की सब्जी लाने ले जाने में हो सकती है। वह देरी बीएलओ कार्य को करने

के कारण हो सकती है लेकिन दुर्भाग्य है ऐसी कमरों में बैठकर खरें जारी करने वाले हुक्मरानों को यह भला कहां दिखाई देता है। हुक्मरानों को यह भी दिखाई नहीं देता कि जो विभाग समय से पदोन्नति और वेतन नहीं दे सकता वह किस तरह शिक्षकों के साथ न्याय का झूठा दिखावा कर सकता है। आंकड़ेवाजी में उलझा विभाग कब मूल शिक्षा से कोसों दूर होता जा रहा है यह बेहद चिंतनीय है। क्या विद्यालयों को हम वह समस्त भौतिक संसाधन दे पाए है जो एक विद्यालय के लिए जरूरी है? उत्तर मिलेगा नहीं बिल्कुल नहीं। हम देखेंगे विभाग समाज में एक सोच देना चाहता है कि शिक्षक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग नहीं है जबकि क्षेत्र में जाकर देखा जाए तो आंकड़े इसके उलट प्राप्त होते हैं। जबरन दी जाने वाली मई जून की छुट्टियां सिरे से समाप्त होनी चाहिए, उनके स्थान पर 3० दिवस ड्यूटी की व्यवस्था होना चाहिए। 15 हाफडे लीव की व्यवस्था होनी चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि परिवार या किसी परिचित में शादी विवाह या दुर्घटना हेतु हम मात्र 14 आकस्मिक अवकाश से कैसे अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सकेंगे यह बेहद चिंतनीय है।

चिंतनीय तो तब हो जाता है जब एक शिक्षक या शिक्षिका अपने स्वयं के विवाह हेतु चिकित्सकीय अवकाश लेती है। मेरी समझ के बाहर है कि विवाह हेतु अवकाश , चिकित्सकीय अवकाश की श्रेणी में आता है? घाल मेल बहुत है लेकिन हुक्मरान अपने जिद्दी रवैए में इस कदर मशगूल है कि उन्होंने प्रदेश के मुखिया तक को दिग्भ्रमित कर रखा है। जरूरी है मजबूती से ऊल जलूल आदेशों का एकजुतता के साथ विरोध किया जाए अन्यथा शोषण की इबारत यूं ही लिखी जाती रहेगी। संगठन के साथ मजबूती से खड़े रहिए। विजय सुनिश्चित है.....

अधर में फुटपाथी बच्चों का भविष्य



पूजा गुप्ता मिर्जापुर, उ.प्र.

भारत ऐसा देश है जहाँ सड़कों पर जिल्लत का जीवन बिताने वाले बच्चों की संख्या सबसे ज्यादा है। यह बच्चे स्कूल जाने की उम्र में स्टेशन पर भीख मांगते हैं या जूता पॉलिश करते मिलेंगे। ऐसे बच्चों की संख्या लगभग आठ करोड़ है ऐसे बच्चें एयर कंडीशन गाड़ियों को धोते हुए, पसीने में लथपथ चौराहे पर टिशू नैपकिन बेचने वाले, अपार्टमेंट में झाड़ू पोछा, बर्तन साफ़करने वाले ऐसे हजारों की तादाद में मौजूद है। आजादी के इतने साल बीत गए लेकिन अभी तक ऐसे बच्चों का हम कोई भविष्य तय नहीं कर पाए हैं जो फुटपाथ में पड़े होते हैं और इनके लिए कोई योजनायें नहीं बनाई गई है और यदि कोई योजनायें तैयार की जाती है तो उसकी फ़इलें कहीं ना कहीं धूल खाती मिलेगी और फंड के निवाले किसी और के गले में उतर जाते हैं। सड़क के बच्चों के लिए यूनेस्को और वर्ल्ड बैंक जैसी संस्था द्वारा करोड़ों रुपए का अनुदान बच्चों के विकास और कल्याणकारी योजनाओं के लिए दिया जाता है ईन करोड़ों रुपए के अनुदान का कितने प्रतिशत इन बच्चों पर खर्च होता है कोई नहीं जानता और अनुदान का पैसा कहा जाता है? यह तथ्य किसी से नहीं छुपा है! सड़क पर पल रहे इन बच्चों को अपना पेट पालने के लिए खुद की मशक़त करनी पड़ती है उनका और कई तरह से भी शोषण होता है। ऐसे हालातों के शिकार इन बच्चों के लिए किसी भी दिवस के क्या मायने हैं? दिवस और आयोजन तो उनके लिए होते हैं जिनका पेट भरा होता है जिन्हें भावनात्मक सुरक्षा और घर परिवार का प्यार मिल रहा है तब क्या कोई जरूरत रह जाती है? बाल दिवस



सफ़र करते हुए लोगों से पैसा मांगना शुरू कर देते हैं, जितने भी यात्री बैठे होते हैं उनमें से कई लोग उन्हें पैसा भी नहीं देते हैं केवल मनोरंजन मात्र का पुतला समझकर उसे सांत्वना में वाही वाही देते हैं। ये वह बच्चे होते हैं जिनके पास अपने खुद के मकान नहीं होते यह कहीं ना कहीं रास्तों पर झुग्गी झोपड़ी बनाकर चूल्हे की आग में कच्चा पक्का खाना बनाकर जिसमें आधा खाना ही होता है कभी रोटियां नदारद, तो कभी सब्जी! भीख मांग कर इन्हें जो अन्न प्राप्त होता है इससे वह गुजर-बसर करते हैं। ठंड के दिनों में कड़कड़ाती हुई रात में इन्हें तन ढकने के लिए कपड़े भी नहीं मिलते। कहीं इनका भविष्य जा रहा है?

क्यों नहीं सोचा जाता है इनके बारे में? आखिर कहाँ जाता है इनकी सुरक्षा पर दिया गया पैसा? क्या फुटपाथ पर गुब्बारे बेचते बचपन को कभी खुद को गुब्बारों से खेलना नसीब हो पाएगा? क्या कभी हम इस जिम्मेदारी को अपना समझेंगे? क्या कभी इनसे जुड़े सवाल सिर्फ़ किसी एक दिन तक सीमित होने की बजाय एक व्यापक प्रयास बन पाएंगे? और क्या हम और आप इन सवालों के सार्थक जवाब ढूँढ पाएंगे?

कई संस्थायें ऐसी है जहाँ बच्चों के लिए गंभीरता से काम तो कर रही होती है इनके प्रयास भी बेशक सराहनीय है। यूनिसिटी भारत में फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों के लिए कई कार्यक्रम चलाता है बच्चों का यौन शोषण और उसके ऊपर होने वाले अपराधों को रोकने की योजना इसमें मुख्य है सारे कार्यक्रम ठीक से लागू किए जा रहे हैं कि नहीं इन पर मानवाधिकार आयोग भी नजर रखता है। कानून सरकार तो काम कर ही रहे अगर यह योजनायें ठीक से लागू हो तो काफी हद तक इन बच्चों का हित हो सकता है लेकिन इन सबके साथ एक दायित्व जनता का भी है आप इस समाज का हिस्सा है और आपकी समाज के प्रति कुछ जिम्मेदारी भी बनती है। आपके द्वारा किया गया एक छोटा सा प्रयास बच्चों के भविष्य को उजालों से भर सकता है। यदि आप समर्थ हैं तो किसी बच्चे की पढ़ाई का खर्च उठा सके, सर्द रात में ठिठुरते किसी बच्चे को कपड़े दे सके तो अपना योगदान जरूर दें। चाहे व्यक्तिगत रूप से या किसी संस्था के माध्यम से। केवल सरकार को कोसते रहने से और उम्मीदें लगायें कि आपको दूसरे देशों से भीख मिले क्यों ना अपने देश में सड़कों पर जीवन बिता रहे इन बच्चों के लिए कुछ करें! क्यों ना छोटे-छोटे ही सही कुछ प्रयास हम और आप ही करें ताकि यह बच्चे भी मना सके सारे त्योंहार! यह भी मुस्कुरा सके इनके हाथों में किताबें हो और ये गर्व से कह पाए कि 'सारा आसमान हमारा है और हम इस देश की किस्मत है!'





शिशिर शुक्ला शाहजहांपुर

असंभव सब कुछ अपने में समाहित करके अच्छी तरह हजम कर लेने की क्षमता अगर किसी माई के लाल में है, तो भइया वो है- 'काश'। एक फ़िल्मी गीत तो हम सबने सुना होगा- 'ऐ काश कहीं ऐसा होता, कि दो दिल होते सीने में...'। माना बेचारे टूटे दिल वाले आशिक ने भावनाओं के बहाव में ऐसे उदगार व्यक्त किए लेकिन अगर लफ्जों के अर्थ पर गौर किया जाए तो सीने में दो दिल पैदा करना तो शायद भगवान के लिए भी असंभव है। यह तो केवल और केवल 'काश' के ही वश की बात है। एक दूसरे गीत पर जरा गौर फ़र्माएं- 'मुझसे मोहब्बत का इजहार करती, काश कोई लड़की मुझे प्यार करती...'। सरासर जाहिर है कि लड़की बेचारे देवदास को रती भर भी भाव नहीं दे रही, लेकिन अपना आशिक भी शेरदिल है। उसने 'काश' का सहारा लेकर लड़की को प्यार और इश्क के लिए मजबूर कर दिया। परीक्षा के परिणाम के बाद फेल हो जाने वाले दुर्भाग्यशाली विद्यार्थी 'काश' का ही सहारा लेकर अपने जख्मों पर मरहम लगाने की कोशिश करते हैं। मरहम बड़ा कारगर सिद्ध होता है और कुछ ही दिनों में विद्यार्थी अपने दुखदर्द को भूलकर मौजमस्ती में मगन हो जाता है।

इश्क के भूत की जकड़ में फंसे युवक

काश..

हास्यव्यंग्य

युवतियों के लिए तो मानो 'काश' एक रामबाण है। 'काश' के सहारे ही वे अपने दिन और रात उसी तरह से काट डालते हैं जैसे सर्दी से ठिठुरता इंसान दूर कहीं जलती हुई आग के सहारे गर्मी पाने की कोशिश करता है। कुल मिलाकर 'काश' की महिमा अपरम्पार है और सबसे खास बात तो यह है कि 'काश' एक निहायत दयालु और कृपालु प्रवृत्ति



का प्राणी है। इतिहास गवाह है कि जिस किसी ने भी इससे सहायता मांगी है, उस पर इसने दिल खोलकर कृपा बरसायी है। 'काश' के दर से आज तक कोई कभी निराश एवं खाली हाथ नहीं लौटा। ...काश ऐसा होता, काश वैसा होता, काश मैं यहाँ होता, काश वहाँ होता, काश फ़्लाने जीवित होते, काश ढिमका मर जाता... आदि न जाने कितने संवादों के माध्यम से बेचारे 'काश' के सीधेपन का नाजायज फ़ायदा उठाकर न जाने कितना बोझ उसके कन्धों पर लाद दिया जाता है। अपनी जिम्मेदारियों, नाकामियों और गलतियों से पीछा छुड़ाना हो तो

'काश' से बेहतर उपाय कोई नहीं है। उदाहरण के तौर पर, 'काश प्रश्नपत्र सरल आया होता...', केवल इतना कहकर तथाकथित विद्यार्थी अपने निकम्मेपन पर पर्दा डाल सकते हैं। 'काश मेरे पास इस समय एक अच्छी नौकरी होती...', ऐसा बोलकर लंगूर टाइप के आशिक भी अपनी महबूबा पर अपना रंग चढ़ाने में मिली नाकामी पर पर्दा डालने में सफल हो जाते हैं जबकि सत्य तो यह होता है कि जिसे वे अपनी महबूबा समझने की गलतफ़हमी पाल रहे होते हैं, वो तो किसी और के साथ ही प्रेमलीला रचा रही होती है।

काश मैं अरबपति होता..काश मैं प्रधानमंत्री होता..., काश मैं ये कर पाता, काश मैं वो बन जाता...ये कुछ ऐसे स्वप्न हैं जो बिना 'काश' की मदद के कदापि नहीं देखे जा सकते। गरीबी को अमीरी में, काले को गोरे में, नाटे को लंबे में, कागज को नोटों में, झोपड़ी को महल में...और भी इसी तरह के जटिल रूपांतरण करने की सामर्थ्य यदि किसी में है, तो वो है 'काश'। निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि 'काश' एक अमोघ अस्त्र है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो बेचारे अपने कुकर्मों, निकम्मेपन, मजबूर हालातों अथवा रूठे हुए किस्मत के मारे हैं। हम सबको 'काश' के रूप में मौजूद हमारे इस सच्चे हमदर्द की पूजा करते हुए सदैव इसका आभारी होना चाहिए। खैर, अब इतनी रामायण 'काश' पर हो ही गई है, तो लगे हाथों मैं भी इसका लाभ उठा ही लेता हूँ। 'काश' आप सबकी नज़रें मेरे इन उच्च विचारों पर पड़ें और आप इन्हें पढ़कर मेरी तारीफ़ों के पुल बांधें।

है अवाक पतझर

गीत

हमने खुद को बुना नीड़-सा,
हमें माफ़करना तिनको!
इस मन को आकार मिला है
छोटी-छोटी चीजों से।
तुम्हें रचा है ओ मुस्कानो!
हमने अपनी खीजों से।
जब हम थे उद्विग्न बया-से,
कैसे भूलें उस दिन को!
कैसे कहें कि किन लोगों ने
इस जीवन में राग भरे!
है अवाक् पतझर, क्यों अब तक
कभी न मन के पात झरे।
हरा-भरा रखती हैं सब कुछ,
ये ऋतुएँ सौंपू किनको?
बहते रहे शिलाओं पर हम
अपने रचे प्रपात लिए।
रोके हैं इस तरह अश्रु, ज्यों
फूल ओस की बूँद पिए।

हुआ न रिक्त कोश चोटों का,
क्या आभार कहूँ इनको?
उम्मीदों की नदी अहर्निश
लहरिल-लहरिल लगती है।
आस जिन्दगी के चेहरे का
सुन्दर-सा तिल लगती है।
होने थे मैदान उन्हीं के,
थीं पसन्द गेंदें जिनको।



सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी लखनऊ

दोहे

खाने को रोटी नहीं, और न तन पर चीर।
लाखों दीये जल रहे, फिर भी सरयू-तीर।

जिसको हरदम ही रहे, अपनी ही परवाह।
उसे सुनाई कब पड़े, दीन-दुखी की आह।

घोर अमावस हो भले, कहिए उसे न रात।
राजा को भाती नहीं, कोई सच्ची बात।

जनधन को बरबाद कर, कर ले लाख प्रचार।
लेकिन हाँड़ी काठ की, चढ़े न बारम्बार।

झूठ, सत्य होता नहीं, करिए लाख प्रचार।
राजस गुण पाए नहीं, रंगा हुआ सियार।



राजेन्द्र वर्मा लखनऊ

हास्य गज़ल

कैसे-कैसे कमाल करते हो!
पीले चेहरों को लाल करते हो!!
जानते हो है दोष मुर्गी का,
फिर भी मुर्गा हलाल करते हो!
शायर उम्दा हो या कि हो घटिया,
हूट कर के बवाल करते हो!
उत्तरों को पसीना आ जाता,
ऐसे ऐसे सवाल करते हो!
उल्लुओं ने मदद नहीं मांगी,
रोज उनका खयाल करते हो!
लोन लेकर तुम्हारा टरकाना,
दिन महीनों को साल करते हो!
आंकड़ों में घटा के महंगाई,
सब का जीना मुहाल करते हो!



दिनेश रस्तोगी शाहजहांपुर

गजल

क्या सही क्या गलत पता है मुझे,
इसका अहसास भी रहा है मुझे।
रोशनी बाँटता चिराग हूँ मैं,
क्यों हवा ने बुझा दिया है मुझे।
सिर्फ़ इक शख्स का हुआ जाना,
जिंदगी लग रही सजा है मुझे।
अए खुदा तू मुआफ़कर उसको,
आज जो दे गया दगा है मुझे।
मौत इस जिन्दगी का हासिल है,
खामोखाँ क्यों रहा डरा है मुझे।
खूब रोया लिपट के वो मुझसे,
बाद मुहत वो जब मिला है मुझे।
'ज्ञान' दौलत ने उसको छीन लिया,
जिसकी आँखों में रब दिखा है मुझे।



ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' शाहजहांपुर

गजल

वो हमसे दूर जब से क्या हुआ है।
भरोसा इश्क से उठने लगा है।
भुला दो ख्वाब के मार्निंग मुझको,
अरे, यह खत में तुमने क्या लिखा है।
सुना है इन दिनों वो है परेशां,
यकीनन फिर उसे धोखा हुआ है।
फिज़ाओ में मुहब्बत घोलने पर,
बलंदी का मुझे तोहफा मिला है।
जो हम यह शेर अब कहने लगे हैं,
तुम्हारे रूठ जाने का सिला है।
फकत कुछ देर बैठो पास मेरे,
बिछड़ना उम्र भर का हो रहा है।
समझ आता नहीं 'ऋतुराज' मुझको,
भला किस बात पर तू अब खफा है।



विकास सोनी 'ऋतुराज' शाहजहांपुर

यह दुनिया ऐसी है

डूब रहे हो तुम मग्नधार में
तो देखती रहेगी
यह दुनिया तुझे कोई नहीं बचाएगा
डूब गया बेचारा कह कर
थोड़ा सा शोक जताएगा
यह दुनिया ऐसी है यह दुनिया ऐसी ही है
गरज पड़े अपना तो
अपनों से नाता रखती हैं
निकल गया जो काम तो
अपनों को पराया कहती है
यह दुनिया ऐसी है
गिर रहे हो तो कोई
तुम्हें नहीं उठाएगा
पहुँच गए अगर तुम
ऊँचाइयों पर तो
वहाँ से हर कोई तुम्हें
गिराने में लग जाएगा
यह दुनिया ऐसी है



रितु चौरसिया ,नई दिल्ली



डॉ अशोक, पटना

हसरतें हजार

नादां दिल की हसरतें हजार
नजर ही नजर में हो रहा प्यार
करूँ कुछ इशारे खिड़की से उसको
या झञ्जे से आँखें करूँ उससे चार
लहराती चलूँ चोटी में परादे
आँखों में लगा लूँ कजरे की धार
नादां दिल की हसरतें तो देखो
जर्मी पर बिछा दे सितारे हजार



स्मिता, बोकारो झारखण्ड

तीन मर्तबा...



टीकेश्वर सिन्हा बालोद, छत्तीसगढ़

निकाह के चंद साल गुजरे थे कि सलमा बेगम और जावेद मियाँ का सम्बंध खराब हो गया। अब वे नाममात्र के मियाँ-बीवी रह गये थे। जावेद के साथ सलमा का गुजारा मुश्किल होने लगा। बात-बात पे जावेद सलमा को मायका चले जाने को कहा करता था। जावेद को बिरादरी वालों भी से कोई खौफनहीं था य तभी तो घर आये मेहमान अपने साला अजहर मियाँ और खुद की बहन कहकशाँ को बेइज्जती का अहसास कराया था। आज कहकशाँ बेहद परेशाँ थी। अपने भाईजान



जावेद की हरकत उसे बहुत बुरी लगी थी। पहली दफा वह अपने शौहर अजहर मियाँ से खौफखा रही थी य जबकि उसे हमेशा अजहर

लघुकथा

पे शक्ले-खुदा दिखती थी।
अमन व सुकून भरी जिंदगी से खुश कहकशाँ पहली मर्तबा अजहर का तमतमाया चेहरा देख उनसे आँख नहीं मिला पा रही थी, क्योंकि सलमा भाभी के लिए जावेद भाईजान के द्वारा इस्तेमाल तलाक के तीन लफ्ज उसके कानों में गूँज रही थी उसे बेहद परेशान कर रही थी। तभी अजहर मियाँ कहकशाँ के करीब आया। सर पे दुपट्टा चढ़ाया। माथा चूमा। सीने से लगाया। कानों में मुस्कराते हुए कहा - 'मुहब्बत...मुहब्बत...मुहब्बत...!'

रेसिपी

हम आप और रसोई

शकरकंद के गुलाब जामुन

जैसा की सर्दियां आने वाली है और ताजी शकरकंद मिलना शुरू हो जाती है। ऐसे तो हम बहुत तरीके के गुलाब जामुन पसंद करते है अगर आप शकरकंद के गुलाब जामुन बनाएंगे तो स्वाद बहुत मजेदार और रस से भरा हुआ बनेगा। तो रेसिपी शुरू करते है।



शगुफता अजीज
कानपुर



नोट:

शकरकंद कढ़कस जरूर करे। गुलाब जामुन का आटा मुलायम होना चाहिए। भिगोते समय चाशनी गुनगुनी होनी चाहिए। गुलाब जामुन की बॉल्स बिल्कुल चिकनी हो।

विधि

सबसे पहले शकरकंद को धो के उबाल लेंगे। ठंडा होने पर छील के कढ़कस कर लेंगे। कढ़कस किए शकरकंद में मैदा, सूजी, घी, बेकिंग पाउडर, हरी इलायची पाउडर तथा दूध का पाउडर डाल के एक थाली में हथेली से खूब अच्छी तरह मिलाएं। बिल्कुल चिकना आटा गूंध लें। अब रेस्ट होने को 15 मिनट ढक कर रख दे। 15 मिनट हो जाने के बाद आटे को फिर से गूंधे अगर आटा सख्त है तो उस में 1/2 चम्मच दूध डाले फिर गूंधे। बिल्कुल चिकना और मुलायम गुलाब जामुन का मिक्सचर होना चाहिए। अब चाशनी बनाते है उस के लिए चीनी तथा पानी बराबर मात्रा में लेना है। सिर्फचीनी घुल जाने तक पकाए। कोई तार बनाने की जरूरत नहीं है। शकरकंद गुलाब जामुन का आटा अब सेट हो चुका है। हाथो को चिकना कर के गुलाब जामुन की छोटी 2 बॉल्स बना ले। बॉल्स बिल्कुल चिकनी बनाए वरना तलते समय फट जाएंगी। एक कढ़ाई में घी या रिफाईंड तेल मध्यम आंच पर गर्म करे और गोल्डन कलर आने तक फ्राई करे। दूसरी तरफचाशनी गुनगुनी गरम होनी चाहिए (ना तो ठंडी और न तेज गर्म) इस बात का ध्यान रखना होगा। गुलाब जामुन को 2 घंटे चाशनी में भीगने दे। आखिर में गुलाब जल डाल दे।

सामग्री.....

150 ग्राम उबली हुई और कढ़कस की हुई शकरकंद

1 टेबल स्पून सूजी

1 टेबल स्पून मैदा

50 ग्राम दूध का पाउडर

2 चुटकी हरी इलायची का पाउडर

2 चुटकी (1/4 टी स्पून) बेकिंग पाउडर

1 टेबल स्पून देसी घी (पिघला हुआ)

1 टेबल स्पून दूध (अगर जरूरत हो तो)

तलने के लिए घी या रिफाईंड तेल

(डीप फ्राई)

चाशनी के लिए

1 कप चीनी

1 कप पानी

1 टी स्पून गुलाब जल

गजल

ये चाँद जब भी फलक पर जवान होता है
समन्दरों में अजब सा उफ़ान होता है

शदीद धूप में इक अब्र ने ये बतलाया
नसीब वालों के सर सायबान होता है

हर्सी जमीन खुला आसमान होता है
तू साथ होता है सारा जहान होता है

'जिया' कहा है किसी ने कि तुम कहो दिल से
उसे बताओ कि दिल बेजुबान होता है

किसे पड़ेगी जरूरत भला जमाने की
वो मेहरबान अगर मेहरबान होता है

इसी उमीद में रहता हूँ मैं कि तू देखे
मगर न जाने कहाँ तेरा ध्यान होता है

सुभाष पाठक 'जिया'
शिवपुरी, म.प्र.



क्या लिखूँ ?

शोना बाबू के थाना न थाने पर चिंतित जवानी लिखूँ?
या भूखें पेट मेहनत कर आईएएस बनते युवाओं की रवानी लिखूँ?
जरूरतमंदों के आँखों का पानी लिखूँ?
या बेरोजगारों की मजबूरी की कहानी लिखूँ?
मासूम हाथों में खनकते सिक्कों की गिनती लिखूँ?
या बच्चों के भविष्य में चिंतित माताओं की विनती लिखूँ?
कलमकारों की शान्ति को दुनिया का कहर लिखूँ?
या बॉलीवुड में फैलती अश्लीलता को धीमा जहर लिखूँ?
युवा नेताओं की सेल्फी में फुर्सत के वो पल लिखूँ?
या शोषण करवाते इन युवाओं का कल लिखूँ?
बाबा की चाय वो दीवानी लिखूँ?
या दादी के मालपुओं पर कहानी लिखूँ?
बता दो आखिर क्या लिखूँ...
डिप्रेशन में जाते नन्हे मुन्नों की श्मन की बातश् लिखूँ?
या सिगरेट के धुएँ में सुलगते युवाओं के श्मन की बातश् लिखूँ?
लीवर जलाते फ़स्ट फूड के ठेलो को जरूरी लिखूँ?
या ठेला लगाने को इन गरीबों की मजबूरी लिखूँ?
मोबाइल के नशे में बच्चों का भविष्य असुरक्षित लिखूँ?
या मोबाइल में ही शैक्षिक भविष्य सुरक्षित लिखूँ?
बलात्कार सहती उन नन्ही बेटियों का दर्द लिखूँ
या... क्या इन हैवानों को भी कागजों में मद लिखूँ?
दुपट्टे में रहती बहनों की सोच को पुरानी लिखूँ?
या रील्स बनाते लाल पीलों को अपडेटेड जवानी लिखूँ?
देश को बाहरियों से सुरक्षा देती उस वर्दी को लिखूँ?
या देश के अंदर पनपे आतंकियों की बे दर्दी को लिखूँ?
तंबाकू प्रचार से करोड़ों कमाते उन शक्ल वालो को लिखूँ?
या कैसर में भी जान बचाते इन अक्ल वालो को लिखूँ?
समाजसेवी नेताओं की कोठियों की ऊँचाई लिखूँ?
या महँगे डीजल से गरीब किसानों के खेतों की सिंचाई लिखूँ?
मन हो रहा, लेकिन समझ ही नहीं आ रहा की आखिर
लिखूँ तो क्या लिखूँ?



अमित श्रीवास्तव, शाहजहाँपुर



अयोध्या प्रसाद
लखनऊ

बड़े भाग मानुष तनु पावा । अगर विस्तार में न जाएं तो इसका सीधा सा अर्थ है कि बड़े भाग्य से मनुष्य का तन मिलता है।....तन मिल गया तो अब इसको सहेजने, संवारने की जिम्मेदारी भी इंसान की ही है। बड़े भाग से मिला हुआ यह जीवन, आम आदमी के लिए- फ़िल्मी गीत... 'दुनिया में हम आए हैं तो जीना ही पड़ेगा। जीवन है अगर.....जहर तो पीना ही पड़ेगा !' की लाइनों पर एकदम सटीक बैठता है। जहर के रूप में यहां पर तमाम प्रकार के प्रदूषण बिखरे हुए मिलेंगे जिनसे जूझते हुए बड़े भाग से मिले हुए मानुष तन को प्रदूषण से बचाकर, सहेजने का जतन करते रहना ही आजीवन उसकी नियति बन जाती है। विकास और हमारी जागरूकता का आलम यह है कि अब हम, स्वस्थ जीवन शैली की उलझन लिए प्रदूषणजीवी ज्यादा होने लगे हैं। इसके लिए तरह तरह के प्रदूषण से वातावरण पूरी तरह समृद्धि प्राप्त है। चाय के साथ सुबह अखबार पढ़ते समय ही कई बार चाय का स्वाद कसैला सा हो जाता है। खबरों में कहीं वैचारिक प्रदूषण तो कहीं बयानबाजी का प्रदूषण। कहीं किसी अबोध बालिका का अपहरण, बलात्कार! कहीं इंसानियत और संवेदना को शर्मसार करने वाली हैवानियत का प्रदूषण ! घर से बाहर निकलो तो ध्वनि और वायु का प्रदूषण। यानी प्रदूषण से रूबरू होते होते दिन बीत जाता है, फिर अगले दिन एक उम्मीद भरे, खुशनुमा दिन की चाहत के बदले फिर उसी से मिलते जुलते प्रदूषण से

अंतर्मन की ताकत



सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी

मनुष्य जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव भी उतने ही स्वाभाविक हैं, जितना कि मौसम का बदलना, पेड़-पौधों के पत्तों का गिरना और दोबारा उन पर नई कोपलें फूटना। जो व्यक्ति प्रकृति के इस प्रक्रिया को सहजता से स्वीकारता है, वह सुख-दुःख दोनों ही स्थितियों में संतुलित रहता है पर कुछ लोग ऐसी मुश्किलों से बहुत जल्दी घबरा जाते हैं। उनका आत्मबल कमजोर होने लगता है। ईश्वर ने हम सभी को संकट से जूझने की शक्ति समान रूप से दी है पर कुछ लोग अपने अंतर्मन की इस ताकत को पहचान

जीना हुआ मुहाल.....आहिस्ता आहिस्ता !

मुलाकात हो जाती है। इन दिनों वायु में प्रदूषण के माध्यम से फैल रहे जहर का प्रकोप यत्र तत्र खूब चर्चा में है। मंहगाई के उच्चतम पायदानों की तरफ खरामा खरामा कदम बढ़ाते खाद्य सामग्री से दो कदम आगे बढ़कर एक्यूआई लोगों की चर्चा और चिंतन का विषय बना हुआ है। एक शहर से दूसरे शहर प्लेन पर बात करते हुए लोग अपने अपने शहर की एक्यूआई को साझा करने का अवसर हाथ से जाने नहीं देते कि देखो, हमारे यहां इतना तो तुम्हारे यहां कितना ! बाबा रे बाबा ! आंखें जलती हैं और सांस लेना मुहाल हुआ जा रहा है। अभी पिछले हफ्ते हमारे शहर का एक्यूआई इतना बढ़ गया था कि बच्चों को स्कूल भी नहीं भेज सके। ये एक्यूआई इतनी दीनता के साथ शेयर किए जाते हैं मानो इसको बढ़ाने के लिए दूसरे ग्रह से लोग यहां आते हों। इधर हवाओं में जहर घुलना शुरू, उधर चिंतन मनन, विचार गोष्ठी, सेमीनार, कार्यशाला की सम्भावनाओं ने जन्म लेना शुरू कर दिया। बढ़ते वायु प्रदूषण ने तमाम आयोजकों, चिंतकों को मंच पर चिंतन कार्यक्रम आयोजित करने को विवश करना शुरू कर दिया। विषय विशेषज्ञों की तलाश, फिर उनके बहुमूल्य विचारों का प्रस्तुतिकरण और धन्यवाद ज्ञापन के बाद चाय पान के साथ कार्यक्रम का सफ़्त समापन। सब कुछ एक सांचे में ढला हुआ सा। हमारी खासियत है कि अपनी गिरेबान में झांकने की बजाय दूसरों को कोसने में हमें महारत हासिल है। वैसे भी कोसना हमारे स्वभाव का अपरिहार्य गुण है और हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति भी। हमें अपनी गलतियां नहीं दिखाई देती जबकि दूसरों में गलतियों का भंडारण नजर आता है।

इसलिए हम अपने को कभी नहीं कोसते। कोसते हैं सामने वाले को, सरकार को और लक्ष्य संधान करके उनको, जिनसे हमारी वैचारिक या पारस्परिक वैमनस्यता होती है। मुखौटे लगाकर जीना अब हमारी जीवन शैली का अभिन्न अंग बन गया है। वायु प्रदूषण की जिम्मेदार जिन क्रियाओं और उनके दुष्परिणाम से हम भली भांति परिचित हैं, अज्ञानी बनकर पहले उसे अंजाम देते हैं फिर बुद्धिजीवी मानसिकता को सिद्ध करने के लिए उस पर चिंतन, विचार- विमर्श, गोष्ठी और कार्यशाला आयोजित करते हैं। पिछले दिनों इस एक्यूआई का हमारे ऊपर भी बड़ा दुष्प्रभाव पड़ा। दीपावली के अगले सप्ताह हमने राष्ट्रीय राजधानी घूमने का प्लान महीनों पहले बनाया था। टिकट भी बहुत पहले बुक करा लिया था ताकि त्योहारों की भीड़ भड़का का सामना न करना पड़े। लेकिन यात्रा के ऐन मौके पर वहां का एक्यूआई देखकर दिल बैठने लगा तो मजबूरन यात्रा रद्द करनी पड़ी। आंख, गले और फेफड़ों को दुख देना ही है तो अपने शहर में भी एक्यूआई का ग्राफकम है क्या, कि घर से निकलते ही मास्क या गमछे से नाक, मुंह को ढंकना पड़ रहा है। प्रदूषण के मामले में हमारी स्थिति का अंदाजा इस तथ्य से सहजता से लगाया जा सकता है कि वैश्विक रिपोर्ट के आधार पर विश्व के 5 प्रदूषित शहरों में 39 भारत से हैं। एक्यूआई की भयावहता पर अपनी पंक्तियां याद आ रही हैं-
हवाएं हुई हैं जहरीली, आसमां हो रहा, धुआ धुआ ! ढूंढते हैं हम, अपना शहर, जाने वो, खो गया कहाँ !!

नहीं पाते और ऐसे ही लोग राह में आने वाली छोटी-छोटी बाधाओं से बहुत जल्दी घबरा जाते हैं। अपने अंतर्मन की ताकत को पहचानने वाले लोग हर हाल में शांत और संयमित रहते हैं। अपने मन को हर हाल में संयमित रखना मनुष्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। हालांकि मानव मन बहुत चंचल होता है। इसकी गति भी बहुत तेज है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं- 'इंद्रियां बलवान हैं, इंद्रियों से बलवान मन है और मन से भी ज्यादा शक्तिशाली है बुद्धि।' मन को अगर कोई काबू कर सकता है तो वह है बुद्धि। मन में अलग-अलग भाव उत्पन्न होते हैं। कुछ अच्छे तो कुछ खराब। इसके लिए सबसे पहले यह समझना बहुत जरूरी है कि मन के अवगुणों को दूर कर अच्छे गुणों

आध्यात्मिक
ऊर्जा



को अपने अंदर उत्पन्न किया जाए। जैसे ही आपके सद्गुणों की वृद्धि होगी, आप बड़े से बड़े संकटों से जूझने में सक्षम हो जाएंगे पर इसके लिए व्यक्ति के मन में धैर्य का रहना बहुत जरूरी है। ज्ञान एक साधना है, जिसे जीवन भर ऐसे ही ग्रहण करना पड़ता है जैसे कि स्वस्थ शरीर पाने के लिए हम नियमित व्यायाम और योगाभ्यास को अपनाते हैं। ठीक उसी तरह मानसिक शांति के लिए हमें अध्यात्म को भी अपनी जीवनशैली में प्रमुखता से शामिल करना चाहिए। आज हमारे जीवन में जो भी हो रहा है, वह कुछ दिनों के बाद अतीत का हिस्सा हो जाएगा। हमें यही सोचना चाहिए कि आज हमारे साथ जो भी हो रहा है उसमें भी भविष्य के लिए कोई न कोई अच्छाई ही छिपी होगी।

'बागियों' को गले लगाएगी भाजपा

योगी मंत्रिमण्डल के विस्तार की सुगबुगाहट तेज

■ प्रदेश में निकाय व अन्य चुनाव में भाजपा से बगावत करने वाले नेताओं की होगी पार्टी में वापसी

लोक पहल

लखनऊ। निकाय चुनाव में अधिकृत प्रत्याशियों के खिलाफ चुनाव मैदान में उतरने वाले या उनका समर्थन करने वाले ‘बागियों’ की बीजेपी में वापसी होगी। अप्रैल-मई में इन बागियों को छह साल के लिए बाहर किया गया था, लेकिन प्रदेश संगठन ने इससे पहले इन्हें वापस लेने का फैसला किया है। पहले चरण में अवध क्षेत्र के बागियों को वापस लिया जा रहा है। इसके बाद अलग-अलग क्षेत्रों में सदस्यता दिलवाई जाएगी। निकाय चुनाव के दौरान पूरे प्रदेश में 5,००० से ज्यादा कार्यकर्ता और पदाधिकारी बीजेपी से बाहर किए गए थे। बीजेपी में बागियों की वापसी की शुरुआत लखनऊ से की जाएगी। प्रदेश कार्यालय लखनऊ के उन 35 से ज्यादा बागियों को बुलाया गया है, जिन्होंने पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी के खिलाफ चुनाव लड़ा था। इनमें पूर्व कार्यवाहक महापौर, कई पूर्व पार्षद, वार्ड अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष भी शामिल हैं। डिप्टी सीएम बृजेश पाठक, अवध क्षेत्र के अध्यक्ष कमलेश मिश्रा की मौजूदगी में इनकी वापसी होगी। पार्टी ने पहले चरण में अवध क्षेत्र के 3०० से ज्यादा बागियों को चिह्नित किया है। इनमें तीन पूर्व नगर पालिका चेयरमैन, 14 पूर्व पार्षद के साथ पूर्व मंडल और वार्ड अध्यक्ष



शामिल हैं। सूत्रों का कहना है कि बीजेपी विपक्षी दलों में संधमारी के साथ नए चेहरों की जॉइनिंग का भी अभियान शुरू करने जा रही है। प्रदेश कार्यालय में 12०० लोगों की एक साथ जॉइनिंग होगी। इनमें रिटायर्ड आईपीएस हरीश कुमार के साथ सपा, बसपा और कांग्रेस के पूर्व पार्षद, पदाधिकारी शामिल हैं। इसके बाद हर जिले में जॉइनिंग अभियान चलाया जाएगा। प्रदेश मुख्यालय ने सभी जिलों से इसकी सूची मंगवा ली है। पूर्व विधायक, पूर्व सांसद और प्रदेश स्तर के पदाधिकारियों की जॉइनिंग प्रदेश स्तर पर होगी। निकाय चुनाव में बाहर किए गए लोगों की बड़े पैमाने पर घर वापसी कराने के पीछे बीजेपी की रणनीति लोकसभा चुनाव की तैयारी के लिए जमीन मजबूत करना है। सूत्रों का कहना है कि बीजेपी ने बाकायदा एक कमिटी बनाकर बागियों की सूची बनाई थी। कमिटी ने हर जिले में पड़ताल की तो पाया कि कई जिलों में बागी जीत भी गए, पर वे दूसरे दलों में नहीं गए। मूल रूप से वे बीजेपी की विचारधारा वाले कार्यकर्ता ही हैं। अगर वे लोकसभा चुनाव में सक्रिय रहे तो वॉर्ड और मंडल स्तर पर नुकसान भी पहुंचा सकते हैं। बीजेपी लोकसभा चुनाव में कोई रिस्क नहीं लेना चाहती, इसलिए इन्हें वापस लेने की रणनीति बनाई गई है।

30 नवम्बर को अमित शाह से मिल सकते हैं राजभर

लोक पहल

लखनऊ। योगी मंत्रिमण्डल के विस्तार को लेकर विसात बिछनी शुरू हो गई है। काफी समय से उत्तर प्रदेश मंत्री परिषद में शामिल होने के लिए सुभासपा के प्रमुख ओम प्रकाश राजभर व्याकुल है। कई बार सार्वजनिक रूप से भी वह बयान दे चुके हैं कि जल्द ही वह योगी कैबिनेट का हिस्सा होंगे लेकिन लगातार विस्तार में हो रही देरी के चलते राजभर बेचैन है। योगी सरकार में मंत्री बनने की लंबे समय से प्रतीक्षा कर रहे सुभासपा प्रमुख ओम प्रकाश राजभर 3० नवंबर को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से दिल्ली में मुलाकात कर सकते हैं। वे वहां भाजपा



के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से मिलेंगे। राजभर ने कहा कि दूसरे प्रदेशों में हो रहे विधानसभा चुनाव में व्यस्तता के कारण ही मंत्रिमंडल विस्तार में देरी हो रही है।

एनडीए में शामिल होने के बाद से ही लगातार ओम प्रकाश राजभर प्रदेश सरकार में मंत्री बनने का दावा करते रहे हैं। शपथ की नई तारीख के बारे में पूछने पर अब राजभर ने कहा कि उनका मंत्री बनना तय है, लेकिन कब होगा यह तो भाजपा नेतृत्व को ही तय करना है। उन्होंने कहा कि अमित शाह से मिलने के लिए समय मांगा है। उम्मीद है कि 3 नवंबर को उनकी मुलाकात हो सकती है। उनसे मिलकर ही बात रखेंगे। इसके बाद ही मंत्रिमंडल विस्तार की तिथि बताई जाएगी। सब कुछ तय है, सिर्फ समय तय नहीं हो पा रहा है।

कार्तिक पूर्णिमा पर की गई मां गंगा की महाआरती

लोक पहल

हरदोई। जनकल्याणम महासभा के तत्वाधान में मां गंगा महा आरती एवं दीपदान का आयोजन किया गया। संस्था के प्रदेश अध्यक्ष जेके वर्मा ने कल्याण घाट पर मां गंगा की महाआरती 1111 द्वीपों द्वारा की गई एवं दीपदान भी गंगा जी में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजेंद्र निषाद सहसंयोजक मत्स्य प्रकोष्ठ संस्कार भारती कैलाश नाथ निषाद प्रदेश प्रमुख सहकार भारती मत्स्य प्रकोष्ठ-राष्ट्रीय निषाद संघ, श्रीकांत तिवारी आदर्श हॉस्पिटल के प्रबंधक पंकज श्रीवास्तव, जिला पंचायत सदस्य

सत्यनारायण निषाद, समाजसेवी सोबरन लाल निषाद ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर जेके वर्मा ने कहा कि कल्याण घाट पर भगवान राम निषाद राज एवं पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की मूर्ति लगाई जाएगी। कैलाश निषाद ने हिंदुत्व, गाय, गंगा की प्रबल समर्थक भाजपा सरकार से घाट के सौन्दर्यीकरण की मांग उठाई। गंगा आरती में प्रधान सुरेश निषाद, जितेंद्र निषाद, उदयभान निषाद, महंत श्री श्री 1०8 शिवानी दास, कमलेश राजपूत, पंकज, कुलदीप,



श्रीकांत, बृजेश सिंह, शिव बालक, मनीराम, छत्रपाल सिंह, राजपूत दीपक निषाद आज हजारों लोग उपस्थित उपस्थित रहे।

भारतीय संविधान का एक विस्मृत नाम-बेनेगल नर्सिंग राऊ



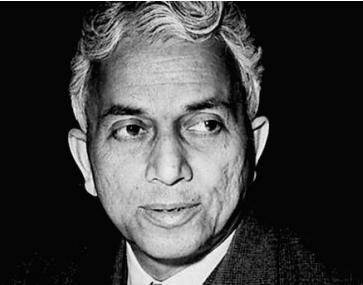
प्रदीप कुमार सिंह
शाहजहाँपुर

हम सभी संविधान निर्माण में गांधी जी, नेहरू जी, पटेल जी, राजेंद्र प्रसाद जी और अंबेडकर जी की भूमिका से भलीभांति अवगत हैं। आज मैं आपका ध्यान एक ऐसे व्यक्ति की

तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ जिसने न सिर्फ संविधान निर्माण में अपितु भारत की आजादी के बाद के भारत की दिशा और दशा के लिए स्वतंत्रता से पहले ही कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। यह व्यक्ति एक लोक सेवक, न्यायाधीश, राजदूत, जम्मू कश्मीर के प्रधान मंत्री इत्यादि जैसे कई महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया। हम सभी इनको संविधान सभा के सलाहकार के रूप में जानते हैं। इस महान व्यक्तित्व का नाम बेनेगल नर्सिंग राऊ है। राजेंद्र प्रसाद जी ने संविधान सभा में 26 नवंबर 1949 को सभा के कार्य का विवेचन करते हुए कहारू इन सब समितियों ने उचित और ठीक रीति से कार्य किया। अपने दो प्रतिवेदन प्रस्तुत किये, जिन पर सभा ने विचार किया। उनकी सिफारिशों को उन आधारों के रूप में ग्रहण किया गया, जिन पर संविधान का मसौदा तैयार किया गया था। यह कार्य बेनेगल नरसिंह राव ने किया। जिन्होंने अपने इस कार्य में अन्य देशों के संविधानों के पूर्ण ज्ञान और इस देश की दशा के व्यापक ज्ञान तथा अपने प्रशस्ति ज्ञान का भी पुट दिया। इसके बाद सभा ने मसौदा समिति नियुक्त की, जिसने बेनेगल नरसिंग राव द्वारा निर्मित मूल मसौदे पर विचार किया और संविधान का मसौदा बनाया। (26 नवंबर 1949)

इससे ठीक एक दिन पहले अंबेडकर जी ने कहा: जो श्रेय मुझे दिया गया है, उसका वास्तव में मैं अधिकारी नहीं हूँ। उसके अधिकारी बेनेगल नरसिंह राव भी हैं जो इस संविधान के संवैधानिक परामर्शदाता हैं और जिन्होंने मसौदा समिति के विचारार्थ संविधान का एक मोटे रूप में मसौदा बनाया। (25 नवंबर 1949) डॉ राजेंद्र प्रसाद ने बहुत बाद में एक पुस्तक 'इंडियाज कॉन्स्टीट्यूशन इन द मेकिंग' के फॉरवर्ड में लिखा, 'अगर डॉ. भीमराव आंबेडकर संविधान निर्माण के विभिन्न चरणों में कुशल पायलट की भूमिका में थे, तो बेनेगल नर्सिंग राव वे व्यक्ति थे, जिन्होंने संविधान की एक स्पष्ट परिकल्पना दी और उसकी नींव रखी। वे संवैधानिक विषयों के जहाँ विशेषज्ञ थे, वहीं साफ-सुथरी भाषा में उसे लिखने की उन्हें कमाल की योग्यता प्राप्त थी। संविधान संबंधी किसी भी विषय की वे तह तक जाते थे। किसी समस्या के हर पहलू की छानबीन करते थे। उस पर वे जो परामर्श देते थे, वह भ्रम निवारण में सहायक होता था। संविधान सभा की बहस में जब कभी विवाद के विषय उठे, तो उसपर उनका परामर्श सर्वथा उचित और संपूर्ण होता था, जो उनके गहरे अध्ययन पर आधारित होता था। संविधान सभा की जो उन्होंने सहायता की उसकी भारत और विदेशों में सर्वत्र सराहना हुई। भारत के संविधान का इतिहास जब लिखा जाएगा तब उसमें बेनेगल नरसिंह राव का महत्वपूर्ण स्थान होगा। डॉ राजेंद्र प्रसाद के इन शब्दों में बेनेगल नरसिंह राव की वह महत्वपूर्ण भूमिका स्पष्ट हो जाती है, जिसे भारत के सार्वजनिक जीवन में विस्मृत कर दिया गया है। बेनेगल नरसिंह राव का जन्म मसूर (अब कर्नाटक) के साउथ केनेरा जिले के कारकल में 26 फरवरी, 1887 को हुआ था। 19०5 में बी.ए. किया और भारत सरकार की स्कॉलरशिप पर लंदन के ट्रिनिटी कॉलेज में पढ़ाई के लिए गए। वहाँ पढ़ाई जैसे ही समाप्त हुई कि उन्हें दो अवसर मिले थे। पहला, उच्च शिक्षा के

लिए फेलोशिप और दूसरा, आई. सी. एस. में चयन। उन्होंने दूसरे को चुना। वर्ष 19०9 में, आई. सी. एस. के लिए कुल पचास सीटें थीं। उनमें वे अकेले भारतीय चयनित हुए थे। उन्होंने भारत सरकार में अपनी सेवा 191० में शुरू की। उसमें लिखा कि 'जिस प्रांत में मेरी नियुक्ति हुई है, यहाँ मेरे बहुत मित्र और हर क्षेत्र में मेरे संबंधी हैं। मद्रास प्रेसिडेंसी में ही मेरे पिता की जमीन भी है। ऐसी परिस्थिति में मैं अपना कर्तव्य पक्षपात से परे होकर संभवतः नहीं कर सकूँगा। इसलिए मेरी नियुक्ति अन्यत्र करें। मुझे आप बर्मा (म्यांमार) भी भेज सकते हैं।' (19०9)



संविधान दिवस पर विशेष

आमतौर पर कोई भी दूसरा होता तो वह इस नियुक्ति को अपना सौभाग्य समझता। लेकिन बेनेगल नरसिंह राव ने अपने पत्र से साबित किया कि वे विचार और व्यवहार, नीति तथा नैतिकता को अपने पर लागू करना जानते हैं। उसके बाद उनकी नियुक्ति बंगाल में हुई। बंगाल और असम उनके सेवाकाल के प्रांत रहे। उनके सेवा काल के दौरान के उनके अनुभव बाद में संविधान निर्माण में खासे उपयोगी साबित हुए। और यह कहना उचित ही होगा कि असम को उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा बनने से बचा लिया। थोड़े दिनों दिल्ली के सचिवालय में कार्य करने के बाद

अप्रैल 1935 में वे कोलकाता हाई कोर्ट के न्यायाधीश बनाए गए लेकिन वहां उनका कार्यकाल संक्षिप्त ही रहा, क्योंकि दिल्ली में उनकी बड़ी जरूरत थी। भारत सरकार अधिनियम, 1935 के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए बेनेगल नरसिंह राव को उस दफ्तर में सितंबर 1935 में ओ.एस.डी. पद पर लाया गया, जहां उन्हें गवर्नर जनरल की संवैधानिक सहायता करनी थी। यह कार्य 3 साल तक चलता रहा। बेनेगल नर्सिंग राव भारत को चिकित्सा क्षेत्र के शोध में दुनिया का अग्रणी देश भी बनाना चाहते थे। वे बेंगलुरु में सेंट्रल हेल्थ रिसर्च संस्था की स्थापना कर नोबेल पुरस्कार प्राप्त एक विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक को भारत लाना चाहते थे, जिसके लिए वह कई साल प्रयत्नशील रहे लेकिन उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली। वे पुनः कलकत्ता लौटे जहां 1939 से 1944 तक हाई कोर्ट में न्यायाधीश रहे। हिंदू पर्सनल लॉ में सुधार के आयोग के अध्यक्ष भी वह रहे। सेवानिवृत्ति के बाद तेज बहादुर सफ़्फ़ जी के आग्रह पर उन्होंने जम्मू कश्मीर के प्रधानमंत्री का दायित्व स्वीकार किया। वहां वह टिक नहीं पाए, क्योंकि वह जम्मू कश्मीर के महाराजा हरि सिंह की कार्यशैली से असहमत थे। वायसराय ने उन्हें दूसरी बार रिफ़र्म ऑफ़िस में सचिव पद पर नियुक्त किया। सचिव पद पर लगभग 1 साल रहने के बाद जुलाई 1946 में उन्हें लॉर्ड बेवल ने संविधान सभा का संवैधानिक सलाहकार बनाया। जिज्ञा की जिद और कैबिनेट मिशन की असफलता के बाद ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने 2० फरवरी 1947 को घोषणा की, उसमें भारत विभाजन के स्पष्ट संकेत थे। तब संविधान सभा की दृष्टि से क्या-क्या किया जाना चाहिए इसका पूर्वानुमान लगाकर जो जो मुद्दे उलझाव के होंगे उनको लेकर डॉ. राजेंद्र प्रसाद थोड़े चिंतित थे। उन्होंने 9 मार्च 1947 को नरसिंग राव को बुलाया और पूछा, 'ब्रिटिश प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद क्या करना

चाहिए'। राव जी इस समस्या पर पहले ही विचार कर चुके थे और उन्होंने संविधान सभा के अध्यक्ष को वरीयता क्रम से उन कार्यों की सूची दी जो उस समय जरूरी थे। नरसिंह राव से मूल मसौदा प्राप्त होने के बाद संविधान सभा के अध्यक्ष ने उन्हें अमेरिका, कनाडा, आयरलैंड और इंग्लैंड भेजा। वहां उन्हें भारत के संविधान पर उन देशों के विशेषज्ञों से परामर्श करना था। अक्टूबर से दिसंबर 1947 के दिनों में वहां गए। उसकी रिपोर्ट संविधान सभा के अध्यक्ष को दी। संविधान निर्माण के समय में ही भारत को कॉमनवेल्थ की सदस्यता प्राप्त करने हेतु प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उनमें अपने दूत की क्षमता देखी। विदेश मंत्रालय में उन दिनों गिरजा शंकर बाजपेई सेक्रेटरी जनरल थे। इस समय बेनेगल नर्सिंग राव को नेहरू जी ने भारत का प्रतिनिधि बनाया। तब से अप्रैल 1949 तक प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के दूत बनकर राव ने लंदन में जो जो अड़चनें भारत के कॉमनवेल्थ सदस्य बनने के रास्ते में थी उन्हें दूर करने के प्रयास किए। 3० नवंबर 1953 में बेनेगल नरसिंह राव का कैसर से देहांत हो गया। बी. शिवराव उनके छोटे भाई थे और सुप्रसिद्ध 'हिंदू' अखबार के संवाददाता थे। जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देकर बेनेगल नरसिंह राव अपने भाई बी. शिवराव के घर पर ही रहते थे। इनमें परस्पर संबंध प्रगाढ़ था। बी. शिवराव को अपने बड़े भाई की योजना पता रही होगी। तभी तो उनके निधन के बाद बी. शिवाराव ने संविधान संबंधी उनके कागजात को खोजा और खंगाला। उसे संपादित कर 'इंडियाज कांस्टीट्यूशन इन द मेकिंग' नामक पुस्तक बनाई और उसके लेखन का श्रेय अपने बड़े भाई को दिया। इतिहास ने उनको और उनके कार्यों शायद आज भुला दिया है। लेकिन देश के प्रति उनका योगदान हमेशा याद किया जायेगा।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर, प्रधान संपादक अरुण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहाँपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहाँपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहाँपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक—सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail: lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहाँपुर होगा।

